

भगत रविदास – सबद २५
सह की सार सुहागनि जानै ॥
रागु सूही, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ७९३

सह की सार सुहागनि जानै ॥
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥
तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥
अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥१॥
सो कत जानै पीर पराई ॥
जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥
दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥
जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥
पुर सलात का पंथु दुहेला ॥
संगि न साथी गवनु इकेला ॥२॥
दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥
बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥
कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥
जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥३॥१॥

सार: सुहागन, सौभाग्यशाली एवं संतुलित मन का एक रूपक है, यह एक शक्तिशाली स्थिति है जिसमें विचार, मूल्य और कर्म परस्पर सामंजस्य में होते हैं। यह अवस्था अपने भीतर घर लौटने जैसी है, स्थिर, सुरक्षित और सच से जुड़ी हुई। भावनाओं को अनुभव किया जाता है और स्वीकार किया जाता है लेकिन वह प्रतिक्रियाओं और इरादों को नियंत्रित नहीं करतीं। इसके विपरीत, दुहागन, दुर्भाग्यशाली, खंडित, बिखरा चित्त, कई दिशाओं में खिंचा रहता है जो डर, लालसा और पुरानी मान्यताओं से चलता है। मन का एक हिस्सा शांति चाहता है जबकि दूसरा बदलाव का विरोध करता है जिससे मन बेचैनी महसूस करता है। दुहागन से सुहागन में बदलाव तब शुरू होता है जब आप

अपनी सच्चाई की ज़िम्मेदारी ली जाती है। यह स्वीकारोक्ति ऐसे सचेत चुनाव करने का रास्ता खोलती है जो सभी के लिए लाभदायक होता हैं जिससे संतुष्टि मिलती है।

सह की सार सुहागनि जानै ॥

केवल एक भाग्यशाली जीवनसाथी ही अपने साथी का सच्चा मूल्य पहचानता है। इसका मतलब है कि जो चित्त एकत्व की अनुभूति से जुड़ा होता है वही पूर्णता की धड़कन को महसूस कर सकता है।

तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥

अहंकार का त्याग कर, यह मिलन के आनंद का अनुभव करता है। यह एक सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए अहंकार को समाप्त करने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है।

तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥

शरीर और मन दोनों को अर्पित करके, यह कोई दूरी नहीं रखता। यह समर्पण को दर्शाता है, 'तुम' और 'मैं' के बीच की रेखा को मिटाता है जिससे एकता की गहन भावना पैदा होती है।

अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥ १ ॥

यह दूसरों को देखता, सुनता या उनसे बात नहीं करता। यह एकाग्रता को दर्शाता है जो किसी मान्यता की खोज नहीं करती, द्वैत के शोर को नज़रअंदाज़ करती है और इंद्रियों के जगत से विचलित नहीं होती। (१)

सो कत जानै पीर पराई ॥

कोई दूसरे के दुःख को सच में कैसे समझ सकता है। अलग होने की गहन पीड़ा को केवल वही समझ सकते हैं जो मिलन के आनंद को भी समझते हों।

जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

अगर किसी ने अपने भीतर करुणा और सहानुभूति का अनुभव न किया हो तब वह कैसे समझे। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि जब अलग होने का दुःख अनुभव होता है तब यह निकटता की ओर भी ले जा सकता है। (१)(विराम)

दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥

दुर्भाग्यपूर्ण, खंडित मन दोनों तरफ से हारता है। यह बताता है कि जो लोग अपने वास्तविक स्वभाव से अलग हो जाते हैं, वह अपनी आंतरिक संतुलन और बाहरी स्थिरता दोनों खो देते हैं।

जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥

यह वह है जो अपने जीवनसाथी के साथ परस्पर सामंजस्य बनाए रखने में विफल रहा। यह दुःख का मूल कारण, निरंतर जागरूकता और सार्वभौमिक चेतना से सतत जुड़ाव की कमी को बताता है।

पुर सलात का पंथु दुहेला ॥

गहरी खाई के ऊपर बना पुल, संकरा है और इसको पार करना मुश्किल है। नरक का यह लाक्षणिक संदर्भ एक नकारात्मक द्वैतवादी मानसिकता का प्रतीक है जो थकान देने वाली होती है।

संगि न साथी गवनु इकेला ॥ २ ॥

कोई साथी नहीं है, स्वयं को अकेले ही यात्रा करनी होगी। यह आंतरिक अलगाव की एकाकी प्रकृति पर ज़ोर देता है जो ज्ञान और जागरूकता की संगति से अलग करता है। (२)

दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥

दुखी, दर्द से पीड़ित, अपनी अंतरात्मा के द्वार पर आया है। यह एक ऐसे पल को दर्शाता है जहाँ अज्ञान समाप्त हो जाता है और अहंकार आत्मसमर्पण कर देता है और जागरूकता से शरण चाहता है।

बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥

स्पष्टता की तीव्र प्यास के बावजूद, कोई जवाब नहीं मिला है। यह बताता है कि हमारा ज्ञान अभी तक इतना गहन नहीं हुआ है कि वह सार के साथ प्रतिध्वनित हो सके, जिससे असंतोष बना रहता है।

कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥

रविदास कहते हैं कि मैं सर्वव्यापी उपस्थिति के पवित्र स्थान में प्रवेश कर गया हूँ। यह पूर्ण समर्पण और स्वयं को पूरी तरह से सार्वभौमिक चेतना को समर्पित करने का अंतिम कार्य है।

जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥३॥१॥

जो प्रकृति के नियमों, मेरी स्थिति और विकास के अनुरूप होगा, उसी के अनुसार घटित होगा। यह पूर्ण खुलेपन को दर्शाता है और नियंत्रण त्यागने के अंतिम कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। (३)(१)

तत्त्व: भगत रविदास बताते हैं कि सच्चाई की ओर यात्रा एक अकेली खोज है और हमारी चेतना के अहंकार और सोच की अनुकूलित मानसिकता के साथ इसे पूरा नहीं किया जा सकता। अपने स्रोत से जुड़ने के लिए 'मैं' की भावना को पूरी तरह से त्यागना ज़रूरी है, भले ही भावनाओं के इस मुश्किल रास्ते से गुज़रना चुनौती भरा हो। भक्त रविदास बेचैन मन की पीड़ा से मुक्ति के लिए चित्त से निवेदन करते हैं जो सच्चाई की देहलीज़ पर खड़ा है। यह पुकार दिखाती है कि विनम्रता ही वह द्वार है जो चेतना की ओर खुलता है और किसी भी खोज को तृप्त कर सकता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com